UGC APPROVED JOURNAL - 47746
INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 03 | January – March 2018

सतत विकास और संसाधनों का संरक्षण पर अध्ययन

PINKI

pinkihooda2809@gmail.com

सार

सतत विकास सिर्फ पर्यावरण के बारे में नहीं है, उससे कहीं ज्यादा व्यापक है। विभिन्न समुदायों में लोगों की विविध जरूरतों, सामाजिक सामंजस्य को पूरा करने, एक मजबूत और स्वस्थ समाज सुनिश्चित करने के लिए समान अवसर पैदा करने के बारे में यह सब सतत विकास भी हमारे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित किए बिना काम करने के बेहतर तरीके खोजने पर केंद्रित है। सतत विकास में अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए भविष्य की आबादी की क्षमता को खतरे में डाले बिना वर्तमान आबादी की जरूरतों को संतुष्ट करना शामिल है। इसके बारे में हर किसी की भलाई में सुधार है, जहां भी वे कर रहे है और इस मील का पत्थर सामूहिक रूप से प्राप्त करने सतत विकास भी गहरा खोदता है। इसका मतलब यह है कि हम कंपनियों का विस्तार करना चाहते हैं, लोगों को सबसे अच्छी नौकरियां हैं, हर कोई पौष्टिक खादूय पदार्थ को खरीदने के लिए जहां भी रहते हैं, गुणवत्ता और हर किसी के लिए सस्ती शिक्षा, हिंसा के बिना भाषण की स्वतंत्रता, और हमारी अर्थव्यवस्थाओं तेजी से बढ़ने के लिए हम पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए नवोन्मेषी प्रौदयोगिकियों का विकास करना चाहते हैं।

मुख्य शब्द: पर्यावरण, सामाजिक, विकास, आबादी, स्वतंत्रता, आदि।

प्रस्तावना

इस अवधारणा पर पहली बार 1987 में ब्रुंडलैंड रिपोर्ट के एक प्रकाशन में चर्चा की गई थी। इस रिपोर्ट में जीवाश्म ईंधन पर आधारित आर्थिक विकास और पर्यावरण पर प्राकृतिक संसाधनों की अधिकता के मुख्य नुकसान और परिणाम शामिल थे। इन घटनाओं के नकारात्मक परिणाम गंभीर थे। वैश्वीकरण के अपने फायदे हैं, लेकिन इसकी कमियां भी हैं। यह सर्वविदित है कि वर्तमान आर्थिक मॉडल समय के साथ प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रखने और टिकाऊ होने के लिए सबसे सफल नहीं है। बिक्री, उपयोग और निपटान के लिए उत्पादों के बड़े पैमाने पर उत्पादन पर आधारित एक मॉडल समय के साथ बनाए रखने के लिए कुछ नहीं करता है।

इस आर्थिक मॉडल के नकारात्मक परिणामों को खत्म करने के लिए, स्थायी विकास का जन्म होता है। इसकी परिभाषा में उस विकास को संदर्भित किया गया है जिसमें वर्तमान पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता है, इसके लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों के लिए इनकी उपलब्धता से समझौता किए बिना।

सतत विकास का एक उदाहरण पेड़ों को नियंत्रित तरीके से काटना हो सकता है जब तक कि उनका पुनर्संयोजन अनुकूलित और सुनिश्चित किया जाता है। दूसरी ओर, ऊर्जा या उत्पादों को उत्पन्न करने के लिए तेल की खपत इससे जुड़ी गतिविधि नहीं है। यह है क्योंकि यह एक अक्षय प्राकृतिक संसाधन नहीं है और, इसके दोहन और उपयोग के दौरान, पर्यावरण प्रदूषित है। यह ऐसा संसाधन नहीं है जिसे हम बदल सकते हैं ताकि आने वाली पीढ़ियां उनका उपयोग कर सकें जैसा कि हम आज कर रहे हैं।

स्थिरता और मुख्य अंतर

स्थिरता वह उद्देश्य है जो सतत विकास चाहता है, इसलिए यह एक रणनीति नहीं है, बल्कि एक उद्देश्य है। इस प्रकार का विकास भविष्य की पीढ़ियों के लिए समान गुणवत्ता और आजीविका को खतरे में डाले बिना पर्यावरण और लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।

ग्रह और उसके संरक्षण को भी ध्यान में रखना एक महत्वपूर्ण कारक है। हम न केवल मानव प्रजातियों को समय रहते जीवित करना चाहते हैं, बल्कि यह भी है कि यह जीवन की उचित गुणवत्ता के साथ ऐसा कर सकता है। हमें क्या सोचना चाहिए कि वर्तमान जीवन मॉडल ग्रह की पुनर्जनन क्षमता से अधिक है। हम बहुत सारी ऊर्जा, पानी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करते हैं। यह केवल उस कचरे का ही नहीं है, बल्कि उसी का उद्गम है। यदि हम जो बिजली बर्बाद करते हैं, वह अक्षय स्रोतों से आती है, जिनका उत्पादन और उपयोग प्रदूषित नहीं करता है, यह एक उचित कारण के लिए भी उचित हो सकता है। हालांकि, बिजली को बर्बाद करना, यह जानना कि इसकी ऊर्जा की उत्पत्ति जीवाश्म ईंधन पर आधारित है जिसका निष्कर्षण और पर्यावरण को प्रदूषित करता है, पूरी तरह से नकारात्मक है।

सतत विकास का उद्देश्य संसाधनों के उपयोग में संतुलन हासिल करना है ताकि बिना नुकसान पहुंचाए इसका आनंद लिया जा सके। एक पारिस्थितिक प्रक्रिया के रूप में यह परिभाषित किया गया है जिसमें पारिस्थितिक प्रणाली और उनकी प्रजातियां उन संसाधनों के साथ पूर्ण संतुलन में रहती हैं जो उनके पर्यावरण में मौजूद हैं। तथाकथित पारिस्थितिक संतुलन जिसमें प्रजातियां

पर्यावरण के अनुरूप हैं। वे जीवित रहते हैं, प्रसार करते हैं और प्रजातियों के बीच प्राकृतिक संसाधनों और बातचीत के आधार पर प्रतिस्पर्धा करते हैं।

सतत विकास लक्ष्यों

सतत विकास की परिभाषा दिए जाने के बाद, हम यह बताने जा रहे हैं कि इसके मुख्य उद्देश्य क्या हैं। ये लक्ष्य वे संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनुमोदित 2030 एजेंडा में शामिल हैं। इस दस्तावेज़ के लिए धन्यवाद, उद्देश्यों की एक बड़ी विविधता को इकट्ठा करना संभव हो गया है, जिनके बीच हमारे पास है:

- दुनिया भर में वस्तुओं और सेवाओं के अधिक समान वितरण के माध्यम से भूख और गरीबी को खत्म करना।
- लोगों और उनकी भलाई के लिए स्वस्थ जीवन की गारंटी।
- काम की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा को बढ़ावा देना, जिसकी वे आकांक्षा कर सकें।
- दुनिया में हर किसी को स्वच्छ पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी सेवाओं तक पहुंच होनी चाहिए।
- असमानता कम।
- प्रदूषण को कम करने के लिए सस्ती और नवीकरणीय ऊर्जा तक पहुंच।
- उद्योगों को अपनी सेवाओं में सुधार करने के लिए नवीनीकृत किया जाएगा और अवसंरचना स्थायी समुदायों का निर्माण करने में सक्षम होगी।
- संसाधनों का जिम्मेदार उत्पादन और खपत।
- जलवायु परिवर्तन और ग्रह और मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभावों के बारे में निर्णय लें।
- शांति, न्याय और इसे सही ढंग से लागू करने वाले संस्थानों को प्राप्त करने के लिए,
- इस संघ के साथ देशों के बीच गठजोड़ करें, वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त करें।

सतत विकास का महत्व

सतत विकास नीचे कील के लिए एक कठिन विषय है क्योंकि यह चीजों की एक विस्तृत श्रृंखत्रा के होते हैं । तकनीकी और इस विषय की जटिलता के कारण, यह सबसे अच्छा है बाहर इसके महत्व की जांच करने के लिए समग्र रूप से यह आसानी से समझ में सक्षम हो। जनसंख्या सतत विकास अभियानों को चलाने का मुख्य कारक है। इसलिए, सतत विकास के महत्व को इस नजरिए से देखा जा सकता है:

1. आवश्यक मानव आवश्यकताएं प्रदान करता है

2. कृषि आवश्यकता
3. जलवायु परिवर्तन का प्रबंधन
4. वित्तीय स्थिरता

सतत विकास के उदाहरण

उदाहरण देने के लिए निम्नलिखित सूची हैं।

- अकार्बनिक कचरे के पुनर्चक्रण को संसाधनों में परिवर्तित किया जा सकता है, जिसका पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण उत्पादों के जीवन चक्र में किया जा सकता है।
- बागवानी या कृषि में खाद बनाने के लिए बायोडिग्रेडेबल कचरे का पुन: उपयोग किया जा सकता है।
- नवीकरणीय ऊर्जा का उत्पादन करने वाले सौर ऊर्जा संयंत्रों में सुधार और वृद्धि।
- दूसरे का फायदा उठाते हुए नवीकरणीय ऊर्जा जैसे हवा, ज्वार, हाइड्रोलिक, लहर, आदि।
- सिंचाई के लिए वर्षा जल का उपयोग, संग्रहण और भंडारण किया जा सकता है।
- जैविक खेती संसाधन संरक्षण को आगे बढ़ा सकती है।
- दौरा करने वाले पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने से बचने के लिए ईकोटूरिज्म।
- सतत गतिशीलता। यह बड़े शहरों में प्रदूषण से बचने के लिए कार्य करता है।

निष्कर्ष

सतत् विकास लक्ष्यों का मुख्य उद्देश्य विश्व से गरीबी को पूर्णतः खत्म करना तथा सभी समाजों में सामाजिक न्याय व पूर्ण समानता स्थापित करना है। भारत को भी गंभीरता से इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अल्बर्ट न्यबर्ग, स्कॉट रोज़ेल - चीन के ग्रामीण परिवर्तन में तेजी, वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक, 1999।
2. डॉन टाउनसेंड। - मोसमैन, एन.एस.डब्ल्यू. - बेसिक प्लानिंग मैनुअल: ग्रामीण विकास परियोजनाएं / एआईडीएबी सेंटर फॉर पैसिफिक डेवलपमेंट एंड ट्रेनिंग के लिए तैयार: एआईडीएबी सेंटर फॉर पैसिफिक डेवलपमेंट एंड ट्रेनिंग, 1991। - सार्वजनिक क्षेत्र की वित्तीय प्रबंधन श्रृंखला।
3. स्टुअर्ट क्रेनर - द अल्टीमेट बिजनेस लाइब्रेरी - आईएसबीएन: 1841120596, पब्लिक। दिनांक: 2003-01-06

4. जैकलिन वॉन, वेस्ट मैनेजमेंट, ए रेफरेंस हैंडबुक, नवंबर 2008, एबीसी-सीएलआईओ
5. जेफ गोल्ड; रिचर्ड थोर्प; एलन ममफोर्ड गॉवर हैंडबुक ऑफ़ लीडरशिप एंड मैनेजमेंट डेवलपमेंट - ISBN: 9780566088582, पब्लिक। दिनांक: २००६-०९-२८,
6. जोडी फ्रीमैन; चार्ल्स डी. कोलस्टेड - बीस वर्षों के अनुभव से पर्यावरण नियमन पाठ में बाजार ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, २००७अध्याय। 11 "म्युनिसिपल सॉलिड वेस्ट स्ट्रीम को विनियमित करने के लिए बाजार आधारित दृष्टिकोण का एक आर्थिक मूल्यांकन"
7. मर्लिन एम. हेल्म्स (संपादक) - इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ मैनेजमेंट - ISBN: 0787665568, पब्लिक। दिनांक: २००५-१२-०१
8. रोम, इटली: संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन और अंतर्राष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय इमारती लकड़ी संगठन 2005 - वन क्षेत्र में कानून के अनुपालन में सुधार के लिए सर्वोत्तम अभ्यास - एफएओ वानिकी पेपर; 145.